P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

खजुराहो का पूर्वी मन्दिर समूह

साक्षी गुप्ता
शोधार्थी,
चित्रकला विभाग,
दयालबाग शिक्षण संस्थान,
आगरा, भारत

सारांश

कला का अभ्युदय मानव के अभ्युदय के साथ–साथ हुआ है। कला का अर्थ इतना व्यापक है कि इसे परिभाषित करना या शब्दों की सीमा में बांधना सम्भव नहीं है। मानव समाज में सभ्यता व संस्कृति के विकास के साथ ही समकालिक कला भी परिवक्वता को प्राप्त कर सौन्दर्यात्मक रूप धारण करती गई। कला अनेक रूपों में मानव के समक्ष प्रकट हुई। वात्सायन कृत कामसूत्र में चौंसठ प्रकार के कलाओं के वर्णन है, जिनमें सें काव्य कला, संगीत कला, चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्यकला ये पाँच ललित कलायें कहलाती हैं। भारत की भूमि आदिकाल से ही संस्कृति व परम्परा की अतुल्य धरोहर रही है। स्थापत्य कला का मानव समाज में विशेष स्थान रहा है।

कला के विभिन्न आयामों में स्थापत्य कला व मूर्तिकला निःसन्देहात्मक रूप से अत्यन्त सामर्थपूर्ण व विविध विशेषताओं से युक्त रही है। भारत के राज्यों में भारतीय पारम्परिक स्थापत्य के विभिन्न स्वरूप दृष्टव्य होते है। स्थापत्य के ये साक्ष्य मूर्तिकला और अलंकरण विधान से परिपूर्ण हैं जो उस स्थान विशेष की तत्कालिक सामाजिक, धार्मिक, व राजनैतिक स्थिति के साथ–साथ कला के प्रति आस्था, निष्ठा व प्रेम को प्रकट करते हैं।

भारतीय राज्य मध्य प्रदेश न सिर्फ भारत का केन्द्र स्थल है वरन् कलाओं का ऐसा स्वर्णिम कोष है, जिसको देखकर व्यक्ति विस्मित हो जाता है। यह प्रदेश अनेक उच्च स्तर की कलात्मकता से परिपूर्ण स्वयं को नव वधू के समान नयनाभिराम और सौन्दर्यमयी बनाये हुए, अपनी विशिष्ट कलामयी विरासत के विविध आयामों से समस्त विश्व को विस्मित किये हुए है। विश्वाकर्षण का केन्द्र मध्य प्रदेश सिर्फ प्रागैतिहासिक कालीन कला, अनेक जनजातीय कला व लोक कलाओं का वर्णन ही नहीं कहता वरन् स्थापत्य कला का भी अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत करता है। स्थापत्य निर्माण की दृष्टि से यह प्रदेश एक समृद्ध स्थल है जिसके उदाहरण खजुराहो मन्दिर समूह, सांची स्तूप, जहाज महल, जहाँगीर महल, जल विलास महल, हिण्डोल महल आदि के रूप में विश्व के समक्ष उपस्थित है। प्रदेश में स्थित समस्त स्थापत्य विश्व में अपने सौन्दर्य की पताका फहरा रहे हैं। जिनमें से खजुराहो के विराट मन्दिर समूहों का विशेष स्थान है।

अपने इस लेख के माध्यम से खजुराहो मन्दिर समूह के पूर्वी मण्डल के मन्दिरों के स्थापत्य, मन्दिरों के प्राचीर में उत्कीर्ण कलाकृतियों व अलंकरण विधानों का कलात्मक अध्ययन प्रस्तुत करूँगी।

मुख्य शब्द : अभ्युदय, खजुराहो मन्दिर, कलात्मकता, संस्कृति, विकास, सभ्यता

प्रस्तावना

मानव आरम्भिक काल से ''कला सृजन'' एवं ''कला वृद्धि'' करता रहा है। उसके प्रारम्भिक प्रयास प्राकृतिक एवं कृत्रिम उपादानों द्वारा स्वयं को सजाने–संवारने तक सीमित रहे। सभ्यता के विकास के साथ कलात्मक अभिव्यक्ति की सीमा बढ़ी और कलापूर्ण वस्तुओं के निर्माण में उनकी अभिरुचि उत्पन्न हुई। शैलाश्रयों में निवास के समय उन्होंने रंग–बिरंगे चित्र बनाये। मिट्टी को भी मानव ने अपनी कला अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया था, जिनमें निर्मित पात्र, मूर्तियों और खिलौने आदि उल्लेखनीय हैं। पके हुये पात्र, मूर्तियों और खिलौने दीर्घ काल तक सुरक्षित रहते हुये आज भी तत्कालीन कला को प्रकाशित करने में सहायक हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

आज भी खजुराहो मन्दिर समूह मैथुन शिल्पाकृतियों के लिये विश्व विख्यात हैं। जन साधारण के मध्य इन शिल्पाकृतियों को लेकर विशेष जिज्ञासा है। खजुराहो मन्दिर समूह की शिल्पाकृतियों के प्रति प्रचलित इस मैथुनिक विचारधारा का खण्डन करके एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करूँगी। मन्दिरों में आध्यात्मिक संस्कृति का विकसित रूप व्याप्त है, साथ ही ये दर्शन में उत्कृष्ट

हैं। खजुराहो का पूर्वी मन्दिर समूह का अध्ययन करने का मेरा उद्‌देश्य मन्दिर समूह की संरचना व शिल्पाकृतियों की अवधारणा, तकनीकी पक्ष व कलात्मकता का अध्ययन कर भ्रामक तथ्यों को प्रकाशित करने का प्रयास है। मन्दिर समूह की धार्मिक व दार्शनिक पद्धति का सामाजिक, धार्मिक व संरचनात्मक विवरण देना है।

भारतीय वास्तु एवं मूर्ति शिल्प में ''खजुराहो'' अपने कला वैशिष्ट्य के कारण ही भारतीय मेखला सादृश्य विन्ध्यॉंचल पर्वत के वृहद् अंचल में बिखरे हुये अनेक कला रत्नों में एक उदीप्त मान रत्न है। अपनी अनूठी कला–धरोहर के रूप में सम्पूर्ण विश्व को आश्चर्यचकित किये हुये हैं व आकर्षण का केन्द्र–बिन्दु है।

खजुराहो स्वयं में एकल है परन्तु एक में भी कुछ विषमताओं के कारण अनेक हैं। यह व्यष्टि स्वरूप है और समष्टि रूप में समग्र है, व्यापक है। यह कृष्ण के विराट रूप की भांति है, जिसमें समस्त जीव एक सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में समाहित हैं।

चित्र सं॰ 1– मैथुन–प्रतिमायें

यहाँ के मन्दिर ज्ञान, भक्ति और कर्मयोग के अतिरिक्त 8वीं–11वीं सदी में मध्य प्रदेश में प्रचलित शैव व शाक्त तन्त्र साधना तथा वज्रयान वाममार्ग का ऐसा सामाजिक दिग्दर्शन है, जो सामान्य ज्ञान की बुद्धि व विवेक से परे है।

यहाँ निर्मित सभी रूपाकृतियाँ तान्त्रिक मान्यतानुसार इस उद्‌देश्य से उत्कीर्ण की गई हैं कि कोई साधना तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक मन में लौकिक विषयों–भोगों की अतृप्त इच्छा अवशिष्ट है। अतः साधना के क्षेत्र में प्रवेश से पूर्व मन और इन्द्रियों के साथ भौतिक शरीर का सभी प्रकार से तृप्त होकर शान्त होना आवश्यक है।

खजुराहो की मिथुन–मैथुन प्रतिमायें प्रकृति और पुरुष की एकात्मकता का सम्बोधक है। इस प्रकार की प्रतिमाओं का निर्माण खजुराहो के अतिरिक्त उड़ीसा व दक्षिण के भी अनेक मन्दिरों में हुआ है।

खजुराहो एक शिल्पित काव्य है, जिसमें रामायण, महाभारत से लेकर विभिन्न पुराणों, उपनिषदों एवं ब्राह्मणों का एक सार गर्भित तथा अर्थपूर्ण सार परोक्ष व अपरोक्ष रूप में प्रतिबिम्बित होता है।

खजुराहो रूप लावण्य और सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् का एक हिरण्यगर्भ है, जिसको देखकर व्यक्ति आश्चर्यचकित हो ठगा सा रह जाता है। योग–वैराग्य, तप–साधना का सार्थक प्रेरणास्त्रोत है। यह अद्वैत है।

चित्र सं॰ 2– दैनिक क्रिया –कलाप पर आधारित मूर्तिशिल्प

भौगोलिक परिप्रेक्ष्य

उत्कृष्ट कोटि की कलात्मकता से परिपूर्ण स्वयं को हृदयाकर्षक और मनोरम बनाये हुये भारत के हृदय में स्थित अन्यतम विश्व विख्यात खजुराहो प्राचीन भारतीय मन्दिर वास्तु व मूर्तिकला का संगम है। यह मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग में छतरपुर जिले से 40 कि॰मी॰ तथा महोबा से 56 कि॰मी॰ की दूरी पर स्थित है। खजुराहों के चारों ओर खेतों में फैली गिट्टियों और छोटे टीलों को देखकर यह ज्ञात होता है कि इस विस्तृत क्षेत्र में कोई विशाल नगर होगा, जिसका वैभव कई सौ वर्ष का रहा होगा। खजुराहो का भव्य कला मण्डप 16.96 वर्ग कि॰मी॰ के विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है।

चित्र सं॰ 3– भारत में खजुराहों की स्थिति

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

चित्र सं॰ 4– खजुराहो के मन्दिर समूह

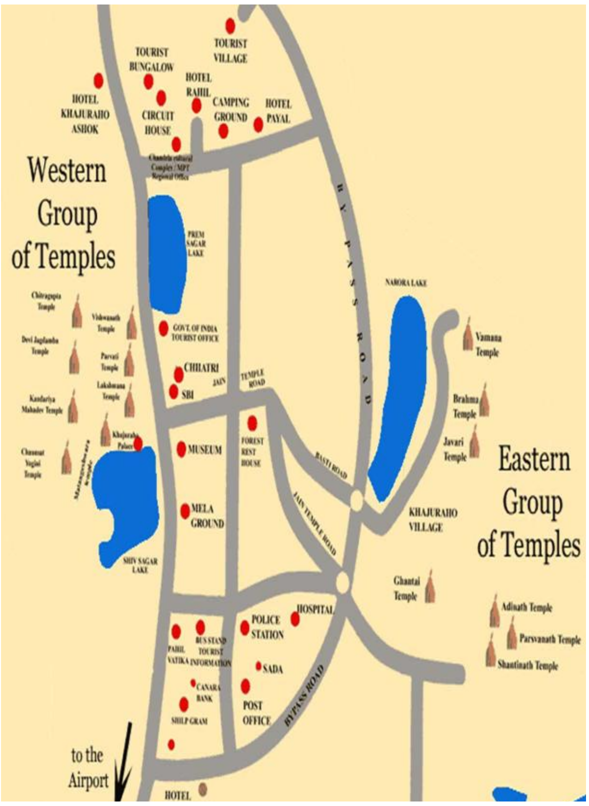

खजुराहो का नामकरण

खजुराहो नाम के विषय में अनेक किंवदन्ती व मत हैं। एक किंवदन्ती के अनुसार, खजुराहो का नाम इसलिये पड़ा क्योंकि प्राचीन काल में इस नगर के प्रमुख द्वार के पार्श्व भाग में स्वर्ण से बने हुये दो खजूर के वृक्षों से सुसज्जित थे। खजुराहो में प्राप्त शिलालेखों में जो वर्तमान में लक्ष्मण मन्दिर (954ई॰) एवं विश्वनाथ मन्दिर (1002ई॰) में देखने को मिलते हैं। एक अभिलेख (गंगदेव शिलालेख) में ''खर्जूरवाहक'' नाम का उल्लेख है। मुस्लिम लेखक 'अलवेरूनी' ने इसे ''खजुराहो'' लिखा है तथा 'इब्नबतूता' ने ''खजूरा'' के नाम से इसका उल्लेख किया है।

चन्दबरदाई के 'पृथ्वीराज रासो' में भी खजुराहो का उल्लेख ''खजूरपुरा'' या ''खजूरपुरी'' के नाम से आता है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

खजुराहो प्रचीन भारत के इतिहास में 9$^{वीं}$ शताब्दी के पूर्वाद्ध से लेकर 12$^{वीं}$ शताब्दी तक के बुलन्देलखण्ड के कलाप्रिय तथा धर्म–सहिष्णु यशस्वी चन्देल शासकों के उर्वर मस्तिष्कों में उपजी कल्पनाओं का वह साकार स्वरूप है, जो पीढ़ियों दर पीढ़ियों में वंशानुगत कुशल शिल्पकारों द्वारा उनके अथक परिश्रम व तपस्या के सुखद परिणाम के रूप में प्रत्यक्षीकरण हुआ है।

चन्देल कालीन इन मन्दिरों में (हिन्दू तथा जैन) जहाँ कलाकारों ने वास्तुशास्त्र तथा प्रतिमा–विज्ञान विषयक अक्षुण्य व असीमित ज्ञान भण्डार का प्रयोगिक दिग्दर्शन है वहाँ इन मन्दिरों की निर्माण–परम्परा में वह भारतीय दर्शन छिपा हुआ है जो हमारी प्राचीन संस्कृति का आधार शिला है।

सत्यं वद धर्मम् चर, स्वध्यान्मः प्रमदाः।
असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मा मृत्योंत्मृतं गमयेति।

ये सभी मन्दिर जगत के कल्याण का संदेश अथवा असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार व अज्ञान से प्रकाश व ज्ञान की ओर तथा मृत्यु से अमरता की ओर ले जाने की प्रेरणा देते हैं।

खजुराहो के मन्दिरों की निर्माण–परम्परा, जो 9$^{वीं}$ सदी से प्रारम्भ हुई, वह 12$^{वीं}$ सदी तक निरन्तर चलती रही। इस दीर्घ निर्माण–परम्परा में अनेक चन्देलवंशीय शासक हुये, जिनका प्रारम्भ सन् 831ई॰ से हुआ और उसके पश्चात् उत्थान–पतन तथा सौभाग्य व दुर्भाग्य के काल को देखते हुये इतिहास के पृष्ठ में सन् 1420ई॰ तक अपने नामों तथा उपलब्धियों एवं अन्तिम समय में पराभाव के साथ अंकित होते रहे। इस 600 वर्षों की अवधि में निर्माण–परम्परा की दृष्टि से विशेषरूप में महाराजा हर्ष (910ई॰–925ई॰) से लेकर परमर्दि देव (1165ई॰–1203ई॰) का शासन काल ही उल्लेखनीय है।

मन्दिर संरचना

मध्य काल में समस्त भारत में विभिन्न राजवंशों के शासन काल में जिन कलापूर्ण श्रेष्ठ तथा छोटे मन्दिरों का निर्माण हुआ वे स्थानीय एवं राजवंशों के नाम पर अनेक नामों से जाने गये। ये समस्त शैलियां उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत के विभाजन के साथ विशेष रूप से 'आर्य शैली' अथवा 'नागर शैली' तथा 'द्रविड़ शैली' के नाम पर सामान्य रूप में जानी गई। द्रविड़ शैली को प्रो॰ कृष्ण दत्त वाजपेई ने तीन वर्गों में विभाजित किया है–

1– उत्तरी द्रविड़ देश शैलियों का प्रारम्भिक युग (550ई॰–10$^{वीं}$ शती के मध्य)

2– दक्षिण द्रविड़ देश की शैलियां

3– उत्तरी द्रविड़ देश की परवर्ती शैलियां (10$^{वीं}$–14$^{वीं}$ शती)

उत्तर भारत व मध्य भारत में भी विभिन्न प्रान्तों में प्रचलित अनेक शैलियां– सौराष्ट्र शैली, महागुर्जर शैली, कश्मीर शैली, गोपाद्रि शैली, कल्चुरि शैली, जैजाक भुक्ति शैली, मालवा शैली आदि 'आर्य शैली' अथवा 'नागर शैली' का ही विकसित रूप हैं।

वास्तुकला की उपरोक्त शैलियों में कुछ स्थानीय विशेषताओं के होने पर भी मन्दिर वास्तु के कुछ तत्व मध्यकालीन भारत में प्रायः समान रूप में मिलते हैं। इस युग में पौराणिक धर्म का व्यापक उन्मेष था। विष्णु, सूर्य, शिव, शक्ति तथा गणेश की पंच–देवोपासना इस काल में अत्यधिक विकसित हो चुकी थी। इन्हीं के नाम पर 'पंचायतन पूजा' का नामकरण हुआ।

पंचायतन उपासना

पंचायतन पूजा से तात्पर्य पाँच प्रमुख देवताओं सूर्य, शक्ति, विष्णु, शिव और गणेश से है, जो पंच तत्वों क्षिति–शक्ति, जल–विष्णु, अग्नि–सूर्य, आकाश–शिव, वायु–गणेश का प्रतीक स्वरूप हैं।

इन्ही पाँच प्रमुख देवताओं के नाम पर उपासकों के सम्प्रदाय भी बने– शक्ति–शाक्त, शिव–शैव, सूर्य–सौर,

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

विष्णु–वैष्णव, गणेश–गाणपत्य। इन पंच प्रमुख देवताओं के निर्माण को अधिक महत्व दिया गया है व निर्माण की यह परम्परा ''स्वर्णयुग'' के नाम से इतिहास प्रसिद्ध **गुप्त काल** के मन्दिरों से सामान्यतः प्रारम्भ हुई। इसका पर्याप्त रूप में परिपालन उत्तर भारत और विशेषतः बुन्देलखण्ड में विशेष रूप में प्रतिहार काल (9वीं–10वींशताब्दी का पूर्वाद्ध) तथा चन्देल काल (9वीं–12वींशताब्दी का पूर्वाद्ध) में व्यापक रूप में हुआ।

चन्देल काल में पंचायतन शैली के मन्दिरों की निर्माण परम्परा

चन्देल काल में ''पंचायतन शैली'' के नाम पर दो प्रकार के मन्दिर देखने को मिलते हैं–

1. केन्द्रवर्ती प्रमुख मन्दिर के चारों कोनों पर स्थित चार लघु मन्दिर
2. प्रमुख मन्दिर के अन्दर ही अर्द्ध–मण्डप, मण्डप, महा–मण्डप, अन्तराल या प्रदक्षिणा–पथ एवं गर्भ–गृह। ये पाँचों अंग अर्द्ध–मण्डप से प्रारम्भ होकर गर्भ–गृह पर जाकर समाप्त होते हैं।

खजुराहो मन्दिर समूह के निर्माण में तत्कालीन उत्तर भारत की बहुप्रचलित ''नागर शैली'' अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची हुई दिखाई देती है। आकार सौन्दर्य और मूर्तिसम्पदा की दृष्टि से ये मन्दिर भारत के अन्य सब स्मारकों अथवा मन्दिरों में अद्वितीय हैं। ये मन्दिर 9वीं–12वीं शताब्दी के चन्देलवंशीय कलाप्रिय शासकों की कलाप्रियता धर्म–सहिष्णुता के साथ–साथ शिल्पकारों के मस्तिष्क की उर्वरा वैचारिक कल्पनाओं का साकार स्वरूप है।

चित्र सं॰ 5– पंचायतन योजना, शिव मन्दिर पर आधारित

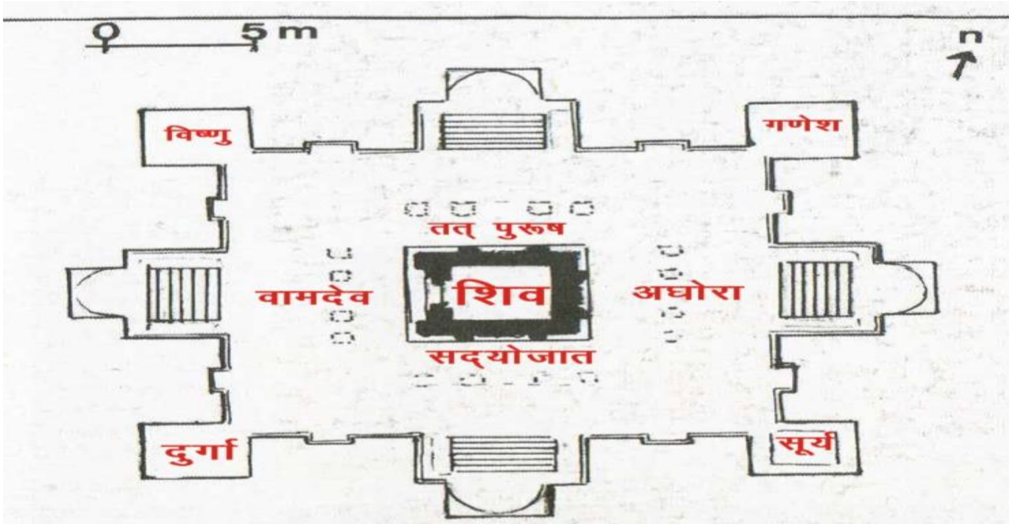

चित्र सं॰ 6

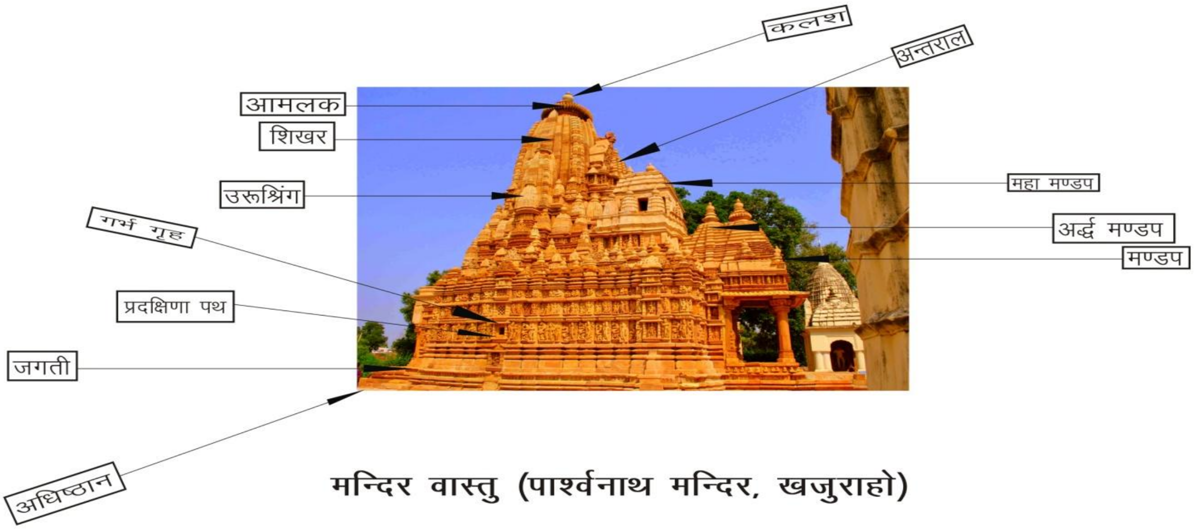

मन्दिर वास्तु (पार्श्वनाथ मन्दिर, खजुराहो)

खजुराहो के मन्दिर ''नागर शैली'' के सबसे सुन्दर तथा विकसित मन्दिर हैं। इस शैली की विशेषता है कि यह मन्दिर ऊँची जगतियों पर पर्वतों के सादृश्य उत्तरोत्तर उन्नत होते हुये शिखरों से सुसज्जित होते हैं। वाह्य रूप से एक दिखने वाले ये मन्दिर आकार में आन्तरिक रूप पर पाँच भागों में विभाजित हैं–

अर्द्ध–मण्डप

प्रवेश कक्ष, प्रवेश बरामदा कहा जाता है, जो चौकोर होता है।

महामण्डप

ऊँचे चबूतरों वाला भाग जहाँ नृत्यांगनायें धार्मिक नृत्य करती है। इसे सभा मण्डप भी कहते हैं।

अन्तराल

गर्भगृह के समीप गलियारे का वह भाग, जहाँ बैठकर पुजारी लोगों को पूजा–पाठ में सहायता करते हैं। यह महामण्डप एवं गर्भगृह को जोड़ता है।

गर्भगृह

जहाँ प्रमुख देवी–देवताओं की प्रतिमायें स्थापित रहती हैं।

प्रदक्षिणा पथ

यह गर्भगृह के चारों ओर होता है, जो कि आन्तरिक एवं बाह्य मन्दिर के मध्य होता है।

आकार रूप से देखने पर खजुराहो में प्रमुखतः दो प्रकार के मन्दिर हैं–

1. मेरू पर्वत के आकार के चार शिखरों से सुसज्जित मन्दिर। पाँच आन्तरिक भागों में विभक्त होने के कारण इन्हें ''सांधार'' मन्दिर कहा जाता है। इनकी विशेषता यह है कि इसमें प्रदक्षिणा पथ मन्दिर के अन्दर ही बना होता है।
2. रथ आकार में बने मन्दिर जो तीन शिखरों (मुख मण्डप, महामण्डप एवं गर्भगृह) से सुसज्जित होते हैं, जो आन्तरिक तौर पर चार भागों में बने होते हैं। इनमें प्रदक्षिणा पथ मन्दिर के बाहर बना होता है, इसलिये इन्हें ''निराधार'' कहा गया है।

ऊँची जगतियों पर खड़े इन मन्दिरों में नींव के तौर पर लावा पत्थर की चट्टानों को प्रयोग में लाया गया है। 'वेदीबन्ध' जगती के ऊपर मन्दिरों का वह भाग है, जिसे मन्दिर का आधार भाग कहा जा सकता है। इसके ऊपर जंघा या मन्दिर की दीवार है, जिसे मन्दिर का मध्य भाग भी कहा जा सकता है। मन्दिर का यह मध्य भाग आन्तरिक मन्दिर के भागों के अनुरूप विभिन्न रूपों में दिखाई देता है। ये मन्दिर प्रमुखतः बालू पत्थर पर बने हुये हैं, जो कि केन नदी के पूर्वी किनारे से लाये गये हैं। मन्दिरों की दीवारों पर बने जनजीवन के कई दृश्यों में पत्थरों को ढोकर लाये लाये जाते हुये बताया गया है। पत्थर के इन खेड़ों को एक–दूसरे से जोड़ने के लिये लोहे के बने काँटों को भी प्रयोग किया गया है। नीचे–ऊपर के पत्थरों को एक–दूसरे से ताले–चाभी की शैली से जोड़ा गया है।

मन्दिर विभाजन

परम्पराओं के अनुसार खजुराहो के मन्दिरों की संख्या 185 बताई जाती है, किन्तु सम्पत्ति के रूप में वहाँ केवल 25 मन्दिर ही सुरक्षित हैं, उनमें भी उनके भग्नावशेष हैं, जो भारतीय कला परम्परा के चरम विकास के परिचायक हैं और उस समय के अमर कलाकारों के सजीव रूप हैं। इन मन्दिरों में विभिन्न धर्म–सम्प्रआयों का समन्वय देखने को मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि तत्कालीन भारत के प्रचलित शैव, शाक्त, वैष्णव, जैन आदि धर्मों के अनुयायी कलाकारों ने अपनी कला साधना को मूर्तिमान कर दिया था, मानो उन्होंने अपने कला–कौशल की स्वयं ही परीक्षा लेने का प्रण लिया था। भौगोलिक स्थिति के अनुसार खजुराहो मन्दिरों को मुख्यतः 3 समूहों के रूप में देखा जा सकता है–

पश्चिमी मन्दिर समूह

चौंसठ योगिनी मन्दिर, ललगुँवा मन्दिर, मतंगेश्वर मन्दिर, वराह मन्दिर, लक्ष्मण मन्दिर, प्रवेश मन्दिर, विश्वनाथ मन्दिर, पार्वती मन्दिर, चित्रगुप्त मन्दिर, देवी जगदम्बा मन्दिर, महादेव मन्दिर, कन्दरिया महादेव मन्दिर

पूर्वी मन्दिर समूह

इस मन्दिर समूह को धर्मानुसार दो भागों में विभक्त किया जा सकता है–

1. हिन्दू मन्दिर समूह– हनुमान मूर्ति मन्दिर, ब्रह्मा मन्दिर, वामन मन्दिर एवं खाखरा मठ, जवारी मन्दिर
2. जैन मन्दिर समूह– आदिनाथ मन्दिर, शान्तिनाथ मन्दिर, पार्श्वनाथ मन्दिर, घण्टाई मन्दिर

दक्षिणी मन्दिर समूह

दूल्हा देव मन्दिर, चतुर्भुज मन्दिर

पूर्वी मन्दिर समूह

1. हिन्दू मन्दिर समूह

हनुमान मूर्ति मन्दिर

यह मूर्ति गाँव की ओर जाने वाले रास्ते पर बनी है, जिसे श्रद्धालुओं ने सिन्दूर से रंग दिया है। यहाँ पर 922ई॰ का शिलालेख प्राप्त हुआ है जो खजुराहो में प्राप्त अन्य शिलालेखों से पुराना है।

ब्रह्मा मन्दिर

हिन्दू धर्म में ब्रह्मा ही एक ऐसे देव हैं जो सृष्टि–रचयिता होने की मान्यता रखने पर भी उपासना के नाम पर जिनकी मान्यता किसी भी युग में नहीं रही है। इसलिये उनके नाम पर मन्दिरों का निर्माण भी नगण्य रूप में ही रहा। इतना अवश्य है कि त्रिदेव में वे विष्णु व शिव के साथ मध्यकालीन मन्दिरों के गर्भगृह के शिरदलों पर अथवा भित्तियों में अलंकरण के नाम पर उनकी लघु एवं विशाल प्रतिमाओं का निर्माण अवश्य ही है।

चित्र सं॰ 7– ब्रह्मा मन्दिर

चन्देलकाल भी इस अपवाद से बच न सका। इसलिये इस युग में ब्रह्मा की प्रतिमाओं का निर्माण तो अवश्य हुआ, पर वे उपास्य देव के रूप में मन्दिरों के गर्भगृहों में प्रतिष्ठापित न हो सके। परिणाम–स्वरूप चन्देल काल में ब्रह्मा के मन्दिर के नाम पर केवल दो ही मन्दिर सम्पूर्ण चन्देल राज्य की विस्तृत सीमाओं में दिखाई देते हैं। इनमें से एक तो है, खजुराहो का ब्रह्मा मन्दिर और दूसरा है दूधई (वर्तमान ललितपुर जनपद) का ब्रह्मा मन्दिर। इनमें से प्रथम मन्दिर का निर्माण काल है, 900ई॰ के लगभग और दूसरे का निर्माण काल है, 10वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध काल अर्थात् महाराजा धंग का राज्यकाल 950–1002ई॰ है। इसका निर्माता धंग का भतीजा देवलब्धि था।

खजुराहो का ब्रह्मा–मन्दिर अपेक्षाकृत अन्य विशाल व श्रेष्ठ मन्दिरों से छोटा, सादा व अलंकरण रहित है। मन्दिर के पाँच भागों के नाम पर केवल गर्भगृह है, जिसके प्रवेश द्वार के साथ ही दो बाँधों वाली सादा जंघाये हैं।

मन्दिर सादे अधिष्ठान पर निर्मित है। गर्भगृह का बाह्य भाग स्वस्तिकाकार रूप में है जिसके प्रत्येक ओर भद्र हैं और अन्तर्भाग वर्गाकार है। इस मन्दिर की छत कोण स्तूपाकार है। पूर्व भद्र में द्वार है एवं पश्चिम की ओर एक अन्य संकीर्ण द्वार है अन्य दो भद्रों में जालीदार वातायन हैं। भद्रों में इस प्रकार का प्रदर्शन खजुराहो की एक वास्तु विलक्षण कही जायेगी।

गर्भगृह के प्रवेश द्वार के केन्द्र में ब्रह्मा व आसपास किनारों पर शिव व विष्णु की प्रतिमायें हैं। द्वार–शाखाओं में अलंकरण के नाम पर गंगा–यमुना की श्रेष्ठ प्रतिमायें हैं।

वामन मन्दिर

ब्रह्मा मन्दिर से लगभग 200 मी॰ की दूरी पर विष्णु के पाँचवें अवतार ''वामन अवतार'' के नाम पर विष्णु–मन्दिर के रूप में इस मन्दिर का निर्माण 1050–1075ई॰ के मध्यान्तर में हुआ। यह मन्दिर निराधार प्रसाद के रूप में सप्तरथ के अतिरिक्त गर्भगृह, अन्तराल व महामण्डप एवं अर्द्ध–मण्डप इन चार अंगों से युक्त होकर निर्मित हुआ है।

निर्माण शैली में यह जगदम्बा एवं चित्रगुप्त मन्दिर के समरूप है। लगभग 63 फुट व 45 फुट चौड़ाई में निर्मित इस मन्दिर के बाह्य भाग में प्रदर्शित मात्र दो जंघाओं में अन्य श्रेष्ठ कहे जाने वाले मन्दिर प्रदर्शित अति कलापूर्ण प्रतिमाओं की भांति कला–सौष्ठव से युक्त अनेक प्रतिमाओं का सफलतापूर्वक प्रदर्शन हुआ है। इन प्रतिमाओं के साथ अन्य मन्दिर में प्रदर्शित सुर–सुन्दिरयों की भांति सुर–सुन्दरियों की भाव–पूर्ण प्रतिमाओं का प्रदर्शन भी आकर्षक व मनोरम बन पड़ा है लेकिन मैथुन–प्रतिमाओं का नितान्त अभाव है।

चित्र सं॰ 8– वामन मन्दिर

विशिष्टतायें

मात्र दो जंघाओं के अतिरिक्त इस मन्दिर की कला में कुछ अन्य विशिष्टतायें भी हैं। इस मन्दिर के महामण्डप के ऊपर पश्चिम भारत के मन्दिरों की भांति ''संधरणा'' नाम से सारगर्भिता लिये जिस छत का कलात्मक निर्माण हुआ, उसमें ''शाल भंजिकाओं'' का सुन्दर प्रदर्शन है। इस मन्दिर की दीवारों पर दो–चार ही आलिंगन के दृश्य हैं, मैथुन का एक भी दृश्य नहीं है। पश्चिम की दीवार पर शिव–पार्वती के विवाह का दृश्य है।

इस मन्दिर के गर्भगृह में वामन भगवान की लगभग 5 फुट ऊँची बड़ी ही मनोरम व भावपूर्ण प्रतिमा है, जो विविध प्रकार के कलात्मक आभूषणों से अलंकृत है।

जवारी मन्दिर

विष्णु को समर्पित यह मन्दिर वामन अवतार मन्दिर के दक्षिण में लगभग 200 मी॰ दूरी पर स्थित है। यह मन्दिर छोटा होते हुये भी आकार–संयोजना में परिपूर्ण है। गर्भगृह, अन्तराल, मण्डप और महामण्डप ये चार अंग से संयुक्त यह निराधार प्रसाद के रूप में होने पर भी अलंकृत मकरतोरण और मनोहर शिखर के कारण विशेष दर्शनीय है। इस मन्दिर को प्रसिद्ध पुरातत्वविद् श्री कृष्णदेव ने ''वास्तु–रत्न'' की संज्ञा दी है।

चित्र सं॰ 9– जवारी मन्दिर

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

निर्माण शैली की दृष्टि से यह चतुर्भुज–मन्दिर के समरूप ही है। इसमें गर्भगृह, अन्तराल व मण्डप एवं अर्द्ध–मण्डप ही दृष्टव्य हैं। गर्भगृह का शिखर भारी होते हुये भी सादा है, परन्तु दो विशिष्ट लक्षणों के कारण यह खजुराहो–मन्दिरों में विलक्षण है। सर्वप्रथम, इस मन्दिर की जंघा के शीर्ष का अलंकरण मध्यकालीन गुजरात–मन्दिरों के एक विशिष्ट लक्षण को प्रदर्शित करता है। दूसरी विशेषता– जंघा की अधः पंक्ति की समस्त देव–प्रतिमाओं का रथिकाओं में प्रदर्शन होना है। यह विशेषता भी मध्ययुगीन पश्चिमी भारत विशेषतः गुजरात–मन्दिरों में देखने को मिलती है, किन्तु इसका निकटतम सादृश्य ग्वालियर के सास–बहू मन्दिर में दृष्टव्य है यह मन्दिर 1075ई॰–1100ई॰ के मध्य में बना होगा।

जैन मन्दिर समूह

आदिनाथ मन्दिर

पार्श्वनाथ मन्दिर के उत्तर दिशा में आदिनाथ मन्दिर स्थित है। यह परिमाप में पार्श्वनाथ मन्दिर से छोटा है एवं निराधार है, जिसमें शिखरयुक्त गर्भगृह एवं अन्तराल मात्र शेष है।

सामान्य योजना, निर्माण शैली एवं मूर्तिकला की दृष्टि से यह मन्दिर वामन मन्दिर के समरूप है। केवल दोनों में अन्तर इतना है कि आदिनाथ मन्दिर की जंघा में मूर्तियों की तीन पंक्तियां हैं, जिनमें सबसे ऊपरी पंक्ति में उड़ते हुये विद्याधरों का प्रदर्शन है।

चित्र सं॰ 10– आदिनाथ मन्दिर

आदिनाथ मन्दिर का शिखर, वामन मन्दिर के शिखर के समान भारी नहीं है, परन्तु समानुपातिक दृष्टिकोण में वह अधिक विकसित दिखाई देता है।

जंघाओं में विविध प्रकार की प्रतिमाओं का सुन्दर चित्रांकन हुआ है, जिससे मन्दिर का आकर्षण और अधिक बढ़ गया है। अर्द्धमण्डप की छत विविध प्रकार के आलेखनों से परिपूर्ण है।

आकार–प्रकार एवं संजोयन तथा निर्माण–शैली की दृष्टि से यह मन्दिर वामन मन्दिर के एक या दो दशक बाद अर्थात् 11$^{वीं}$ शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लगभग 1070–1090ई॰ के मध्य में निर्मित हुआ होगा।

शान्तिनाथ मन्दिर

यह एक प्राचीन जैन–मन्दिर है जिसका अभी हाल ही में जीर्णोद्धार हुआ है। इस मन्दिर के गर्भगृह में लगभग 15 फुट ऊँची प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ (ऋषभनाथ) की विशालकाय प्रतिमा है, जो एक प्रमुख आकर्षण का केन्द्र बन गई है।

चित्र सं॰ 11– शान्तिनाथ मन्दिर

वैसे आयताकार गर्भगृह की भित्तियां सुन्दर प्रतिमाओं से अलंकृत हैं। इनमें से युगलिया नाम की प्रतिमा (आदि पुरुष–दम्पत्ति) मूर्तिकला एवं भावपूर्ण मुद्राओं की दृष्टि से एक सर्वोत्तम उदाहरण है।

आदिनाथ की पादपीठिका पर उत्कीर्ण संवत् 1085 के अकंन से इस मन्दिर के निर्माणकाल का पता चलता है कि यह मन्दिर 11$^{वीं}$ शताब्दी के पूर्वार्द्ध में निर्मित हुआ है।

पार्श्वनाथ मन्दिर

पार्श्वनाथ का मन्दिर संधार प्रसाद है, किन्तु इसमें खजुराहो के विकसित मन्दिरों के समान कक्षासन नहीं है। प्रदक्षिणापथ में प्रकाश हेतु साधारण गवाक्षों की व्यवस्था है।

चित्र सं॰ 12– पार्श्वनाथ मन्दिर

इस मन्दिर में उरुश्रृंगों की दो और कर्णश्रृगों की तीन पंक्तियां देखने को मिलती हैं। इसके साथ ही जंघाओं में विभिन्न प्रतिमाओं से युक्त तीन पंक्तियां हैं एवं सबसे ऊपरी पंक्ति विद्याधरों और उनके युग्मों के सुन्दर चित्रण हैं। ऊर्ध्व पंक्ति में विद्याधरों का चित्रण परवर्ती

खजुराहो की एक विशिष्टता रही है जिसका आरम्भ इसी मन्दिर से हुआ है। कुछ सूक्ष्म भिन्नताओं के अतिरिक्त यह मन्दिर लक्ष्मण मन्दिर के समरूप है।

इस मन्दिर की जंघाओं में उत्कीर्ण अप्सरायें मूर्तिकला के श्रेष्ठ उहाहरण हैं। इनमें से कुछ तो कला–जगत की अनूठी निधियां बन गईं हैं। जैसे– कांटा निकालती अप्सरा, माहुर लगाती सुर–सुन्दरी, पत्र लिखती हुई सुर–सुन्दरी, शिशु को दुलराती हुई सुर–सुन्दरी, कुन्दुक को उछालती हुई सुर–सुन्दरी आदि।

इस मन्दिर की विशेषता यह है कि इसकी जंघाओं में हिन्दू देवी–देवताओं का अंकन है। जैसे– विष्णु के आयुध पुरुष के रूप में शंख, चक्र, गदा–पुरुष, परशुराम, बलराम–रेवती, लक्ष्मी–नारायण, राम–सीता, हनुमान, यमलार्जुन आदि प्रकरण, जो कृष्ण–लीला से सम्बन्धित हैं। इन वैष्णव प्रतिमाओं के अतिरिक्त शिव, काम, रति, दिक्पाल, नव–ग्रह आदि की प्रतिमायें हिन्दू धर्म के शैव, वैष्णव सम्प्रदायों की समन्वयवादी प्रक्रिया का प्रतीक स्वरूप है। धार्मिक सहिष्णुता का जितना सुन्दर प्रदर्शन यहाँ हुआ है अन्यत्र कहीं कहीं नहीं मिलता है।

घंटाई मन्दिर

यह मन्दिर सम्प्रति में जैन–मन्दिर के रूप में सर्वमान्य है। मन्दिर के बाह्य भाग में कनिंघम को अपनी बुन्देलखण्ड की शोध–यात्रा में एक बुद्ध की प्रतिमा प्राप्त हुई थी, जिसके कारण उन्होंने यह मन्दिर बुद्ध को समर्पित बौद्ध मन्दिर माना था। परन्तु उनकी यह मान्यता अमान्य हो गई क्योंकि मन्दिर के प्रवेश द्वार के ललाट–बिम्ब पर गरूड़ पर पर बैठी एक अष्ट–भुजी जैन देवी ''चक्रेश्वरी'' की प्रतिमा अंकित है और उत्तरंग के दोनों किनारों पर एक–एक जैन–तीर्थंकर प्रदर्शित हैं। इसके साथ ही इसी उत्तरंग के ऊपर की पट्टिका का उत्त्कीर्ण सोलह शुभ–चिन्ह महावीर की माता त्रिषाला के सोलह स्वपनों के प्रतीक भी दृष्टव्य हैं। अतः इसे जैन मन्दिर माना जाता है।

चित्र सं॰ 13–घण्टाई मन्दिर

इस मान्दर क स्तम्भा पर घटा व जजारा का अलंकरण है जिस के कारण यह जैन मन्दिर घंटाई मन्दिर के नाम से जाना जाता है।

आकार–प्रकार एवं संयोजन में यह मन्दिर पार्श्वनाथ जैन मन्दिर से भी अधिक विशाल व भव्य था, जिसमें मन्दिर वास्तु के पंच अंग– अर्द्ध मण्डप, मण्डप, महा मण्डप, प्रदक्षिणा पथ व गर्भगृह विद्यमान थे, परन्तु अब केवल अर्द्ध मण्डप व महा मण्डप ही शेष रह गये हैं, जो केवल चार अलंकृत स्तम्भों पर आधारित हैं। जिनमें प्रतीकात्मक कीर्तिमुखों एवं उनमें से निकलने वाले किंकणीजाल और मुक्त मालाओं का प्रदर्शन है। अर्द्ध मण्डप में नृत्यकारों व संगीतकारों का प्रदर्शन आकर्षक है।

स्थापत्य, मूर्तिकला तथा स्तम्भों पर उत्कीर्ण लिपि सम्बन्धी साक्ष्यों के आधार पर मन्दिर का निर्माण सम्भवतः 10वीं के अन्त का माना जाता है।

खजुराहो मन्दिर निर्माण की विशेषतायें

सम्प्रति में प्राप्त शैव, वैष्णव, शाक्त, सौर व जैन सम्प्रदायों से सम्बन्धित मन्दिरों में दो प्रकार के पत्थरों मटियाले, पीले गुलाबी रंग के रेतीले पत्थर व कणाश्म (ग्रेनाइट) पत्थर का प्रयोग हुआ है। प्रायः सभी मन्दिर ऊँची चौकी या अधिष्ठान पर बनाये गये हैं। इन मन्दिरों के चारों ओर किसी प्रकार का घेरा नहीं है। इनका निर्माण पूर्व–पश्चिमाभिमुख धुरी पर हुआ है। इनके तलछन्द व ऊर्ध्वच्छन्द में वैयक्तिक विलक्षणतायें हैं। मन्दिर के दोनों अन्तः व बाह्य भाग विविध प्रकार की कलापूर्ण प्रतिमाओं से अलंकृत हैं। प्रकाश तथा वायु के लिये गवाक्षों की समुचित व्यवस्था है। मन्दिरों के अन्तः भाग में प्रधान तीन अंग– अन्तराल, मण्डप व गर्भगृह हैं। अधिक विकसित शैली में मन्दिरों में प्रदक्षिणा पथ से संयुक्त महा मण्डप है। इस प्रकार ये मन्दिर पंच अंगों के कारण पंचायतन रूप के साक्ष्य बन गये हैं। मन्दिरों का सर्वोच्च भाग छत–समूह है, जिसकी पराकाष्ठा एक मनोहर शिखर के रूप में दृष्टव्य है। अन्तराल, मण्डप व महा मण्डप की पृथक–पृथक कोण स्तूपाकार छतें हैं। गर्भगृह से लेकर अर्द्ध मण्डप की छत का क्रमिक ढलान कैलाश पर्वत श्रृंखला की भांति प्रतीत होता है। मन्दिरों के शिखर–अलंकरण का अपना अलग अस्तित्व है। शिखर की चोटी पर बड़ा आमलक, उस पर चन्द्रिकाओं का क्रम, फिर छोटे आमलक उस पर कलश व अन्ततः बीजपूरक शोभायमान है। मन्दिर में प्रवेश के लिये ऊँचे सोपान कम साथ–साथ मकर–तोरण द्वार है। पर्सी ब्राउन के अनुसार मन्दिर के प्रवेश द्वार ''तराशे प्रस्तर की अपेक्षा हाथी–दांत की नक्काशी अथवा लटकता हुआ वस्त्र विन्यास जैसा प्रतीत होता है।'' मन्दिरों में वितान की कल्पना और कल्पनाओं में कारीगरों की आत्माभिव्यक्ति अत्यंत कुशल तथा सुविकसित अवस्था कला के चरमोत्कर्ष की पराकाष्ठा के रूप में परिलक्षित होती है। जैन मन्दिरों में हिन्दू धर्म से सम्बन्धित प्रतिमाओं के प्रदर्शन में तत्कालीन चन्देल शासकों की धर्म–सहिष्णुता की नीति के साथ–साथ समाज में प्रचलित धर्म–सामंजस्य की भावना दृष्टव्य होती है।

निष्कर्ष

खजुराहो के मन्दिरों का कला सौष्ठव चाहे वह वास्तुकला से सम्बन्धित हो या मूर्तिकला से, वह अपने में अप्रतिम है और उत्तर भारत व मध्य भारत के अन्य मन्दिरों की तुलना में उनका एक अपना अलग ही वर्चस्व एवं महत्व है। अधिष्ठानों पर त्रिरथों, पंचरथों, सप्तरथों, नौरथों तथा दो–तीन जंघाओं से युक्त निर्मित खजुराहो के

मन्दिरों में उनके बाह्य और अन्तः भागों में जितनी भी असंख्य प्रतिमाओं का प्रदर्शन हुआ है, ये सब मन्दिरों के अलंकरण तथा मनमोहक आकर्षण के मुख्य केन्द्र बिन्दु ही नहीं हैं, बल्कि उनमें श्रेष्ठ जीवधारी मानव के शरीर की संरचना के साथ–साथ ही सफल मानव–जीवन के चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के मूल उद्देश्यों की पूर्ति के अतिरिक्त मनुष्य के इहलोक व परलोक की सफलता के लिये मूलभूत सिद्धान्तों पर चलने की प्रेरणा भी अन्तर्निहित है। यही प्रेरणा व सिद्धान्त ही इन मन्दिरों का दर्शन है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

Anand, Mulk Raj: Homage to Khajuraho, Marg Publications Kramrich, Stella

Beguin, Gills : Khajuraho- Indian Temples and Sensuous Sculptures, Abrams Books, 2017, ISBN- 9788874397785

Desai, Devangna : Khajuraho- Monumental Legacy, Oxford University Press, 2000, ISBN- 9780195656435

Desai, Devangna: Khajuraho, Oxford University Press, 2000

Deva, Krishna:Sculpture Ar of Khajuraho, Bamboo Pubns, 1994 ISBN- 8171070027

Dhama, B.L. : A Guide to Khajuraho, Times of India Press, 1927

Ichaporia, Niloufer: Tourism at Khajuraho an Indian Enigma, Annalsof Tourism Research, Vol-10, The Anthropology of Tourism, 1983

Kimani, David: The Temple Complex at Khajuraho, 2013

Lall, Darshan : Khajuraho: A Legacy in Stone, Brijbasi Art Press, 2005, ISBN-9788187902010

Puja,S.: Kajuraho: The First Thousand Year, Penguin Books, 2010

Punja, Shonhita: Devine Ecstacy: The Story of Khajuraho, Penguin Books, 1992, ISBN-9780670840874

Rai Raghu: Khajuraho, Niyogi Books, 2016, ISBN-819263902

Raezer, David,:The Temples of Khajuraho, Approach Guides, 2014, ISBN- Raezer, Jennifer 978-1-936614-24-0

Smith, V.A.: Khajuraho Unveiled, Greenage Books, 2011

वर्मा, महेन्द्र : खजुराहो में काम और दर्शन, भारतीय कला प्रकाशन, 2002 ISBN- 9788186050910

http://www.mptourism.com/sites/default/files/traveltools/khajuraho.pdf

https://en.wikipedia.org/wiki/Khajuraho_Group_of_Monuments

https://www.swantour.com/blogs/temples-of-khajuraho/

https://www.khajuraho-india.org/khajuraho-history.html

https://www.the-maharajas.com/maharajas/luxury-train/CityWise_Pdf/Khajuraho.pdf

https://www.incredibleindia.org/content/incredibleindia/en/search.html?q=khajuraho

http://journals.openedition.org/viatourism/1792

http://www.surveyofindia.gov.in/files/KHAJURAHO.pdf

https://www.culturalindia.net/monuments/khajuraho-temples.html

http://www.khajuraho.ind.in/eastern-group-of-temples.html